Theories about God
ईश्वर सम्बन्धी सिद्धान्त

ईश्वर-सम्बन्धी विवेचन दर्शन तथा धर्म दोनों के लिए अत्यंत महत्व-पूर्ण माना जाता है। इस संबंध में कई सिद्धांत प्रचलित हैं। वे हैं-

(i) अनेकेश्वरवाद
(ii) सर्वेश्वरवाद
(iii) ईश्वरवाद
(iv) केवल निमित्तेश्वरवाद
(v) अनीश्वरवाद
(vi) द्वैतवाद
(vii) एकेश्वरवाद
(viii) निमित्तोपादानेश्वरवाद।

अनेकेश्वरवाद अनेक देवी-देवताओं में विश्वास रखता है। केवल निमित्तेश्वरवाद एकेश्वरवादी सिद्धांत है। इसके अनुसार ईश्वर एक, विश्वातीत, सर्वांगपूर्ण, व्यक्तित्वपूर्ण, असीम तथा निरपेक्ष है। सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर ही सबकुछ है तथा सब ईश्वर है। निमित्तोपादानेश्वरवाद के अनुसार संपूर्ण विश्व ईश्वर में निहित है। संपूर्ण विश्व ईश्वर में समाप्त नहीं हो जाता। उसका अधिकांश विश्व के परे रहता है। यह ईश्वर को एक, असीम, विश्वव्यापी एवं विश्वातीत तथा व्यक्तित्वरहित मानता है। ईश्वरवाद ईश्वर सम्बन्धी सिद्धांतों में अधिक विकसित एवं आकर्षक है। इसके अनुसार ईश्वर एक, सर्वशक्तिशाली, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ एवं करुणामय है। यह विश्वव्यापी तथा विश्वातीत दोनों है। ऐसा ईश्वर ही धार्मिक भावना को संतुष्ट करने में समर्थ सिद्ध हो सकता है। अनीश्वरवाद का अर्थ है - "ईश्वरवाद का निषेध"। इसके अनुसार ईश्वर नाम की कोई सत्ता है ही नहीं। यह ईश्वर का विरोध करता है। द्वैतवाद के अनुसार विश्व का मूल तत्व

एक प्रकार का नहीं है, बल्कि उसकी प्रकृति में द्वैत है। अर्थात् जिस सत्ता में दो मूल तत्वों को या दो मूल तत्वों के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है; उसे द्वैतवाद कहा जाता है। इसका प्रत्यक्ष हम पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों दर्शनों में पाते हैं। एकेश्वरवाद एक ही सत्ता में विश्वास करता है। इसमें विपरित प्रकृति के विभिन्न अंगों को मूलतः एक समझा जाता है। इस प्रकार से ईश्वर सम्बन्धी उपर्युक्त सिद्धांतों में पारस्परिक संबंध भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। यहाँ पर हम कुछ मूलभूत सिद्धांतों की विस्तार से व्याख्या करेंगे। जो निम्नवत् हैं —

(1) अनेकेश्वरवाद (Polytheism) :→

मैकग्रीगर ने अनेक देवी-देवताओं की उपासना को अनेकेश्वरवाद की संज्ञा दी है। वहीं प्रो० फिलन्ट ने अनेकेश्वरवाद की व्याख्या करते हुए कहा है - "It is a belief in more God than One". इसकी व्याख्या polytheism शब्द से भी स्पष्ट होती है। 'Polytheism' शब्द दो शब्दों 'Poly' + 'Theism' से मिलकर बना है। 'Poly' का अर्थ है - अनेक और 'Theism' का अर्थ है - ईश्वरवाद। इस प्रकार से इसका अर्थ हुआ - अनेक ईश्वर में विश्वास। यह एक ऐसा धर्म है, जो अनेक ईश्वर में विश्वास करता है। यह एकेश्वरवाद का विरोधी है तथा अधिक प्राचीन भी है।

अनेकेश्वरवादी धर्म का विकास प्रारम्भिक धर्म के अंत में हुआ है। जिस समय मानव की बुद्धि पूर्णतः विकसित नहीं थी, उस समय इसका प्रादुर्भाव हुआ। यह प्रारम्भिक धर्म एवं अध्यात्मिक धर्म, इन दोनों धार्मिक अवस्थाओं के बीच में अनेकेश्वरवादी धर्म का विकास हुआ।

अनेकेश्वरवाद की सामान्य विशेषताएँ :→

इसके अनुसार ईश्वर के निम्नलिखित सामान्य लक्षण या विशेषताएँ हैं —

(i) - ईश्वर संख्या में एक न होकर अनेक हैं। ये सभी ईश्वर अमर हैं, अजर हैं। ये सदैव प्रकृति में व्याप्त रहते हैं और कभी मृत्यु का शिकार नहीं होते। साथ ही ये प्रकृति के विभिन्न विभागों का संचालन भी करते हैं।

(ii) - अनेकेश्वरवाद के ईश्वर सांसारिक जीव नहीं हैं। ये स्वर्ग में निवास करते हैं। कभी-कभी ये सागर की उत्ताल तरंगों में, भूकम्प में, उषा के रूप में, पर्वत की चोटियों पर और अन्य प्राकृतिक घटनाओं में भी दिख पड़ते हैं। अतः ये अलौकिक हैं।

(iii) - यहाँ ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण माना गया है तथा ये अत्यंत शक्तिशाली हैं। यह मानव की हर इच्छा को पूर्ण करने में समर्थ हैं। इन देवों का जीवन आनंदमय है। परन्तु कभी-कभी पुण्य के समाप्त होने या पथभ्रष्ट होने पर इन्हें भी कर्म सिद्धांत के अनुसार दुःख झेलने पड़ते हैं।

(iv) - अनेकेश्वरवाद में मानव के सौन्दर्योन्मुख प्रवृत्ति की संतुष्टि होती है।

(v) - ये मानव से भिन्न माने गये हैं अर्थात इन पर मानवीय गुणों का आरोपण किया गया है। इनमें मानव के सर्वश्रेष्ठ गुण विद्यमान हैं। जैसे कि, - दया, क्षमा, सहानुभूति, प्रेम, कोमल भावना इत्यादि। साथ ही ये शक्ति, पराक्रम, धैर्य आदि पौरुषपूर्ण भावनाओं के तो स्रोत ही हैं। इस प्रकार यहाँ देवों की कल्पना मानव-रूप में की गई है।

अनेकेश्वरवाद के उदाहरण :→ इसके उदाहरण प्रायः सभी देशों में मिलते हैं। जैसे कि - यूनान, मिस्र, बेबीलोनिया, भारत आदि। यूनानी धर्म में जीयस (Zeus), आर्टेमिस (Artemis), एपोलो

(Apollo) आदि अनेक देवों का उल्लेख हुआ है। मिस्र के देवताओं में Ra (सूर्य देवता), Osiris का नाम आता है। रोम के देवताओं में Mars, Venus आदि। यहाँ Mars (युद्ध-देवता) तथा Venus (प्रेम की देवी) कही जाती है। बेबीलोनिया के देवताओं में मारदुक श्रेष्ठ हैं।

प्राचीन भारत में वैदिक युग में भी अग्नि, वरुण, इन्द्र, सूर्य, सूर्य तारे, उषा आदि अनेक देवताओं का वर्णन मिलता है। परंतु वैदिक काल में ईश्वर-सम्बन्धी विचारों को अनेकेश्वरवाद नहीं कहा जा सकता। ऋग्वेद में कई स्थलों पर कहा गया है - सत्य एक ही है, जिसे विद्वान विभिन्न नामों से पुकारते हैं - (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति)। जो कि स्पष्टतः एकेश्वरवाद का उदाहरण है।

अनेकेश्वरवाद की आलोचना :→ अनेकेश्वरवादी ईश्वर-संबंधी निर्दोष सिद्धांत नहीं माना जाता। इसके विरुद्ध निम्नांकित आक्षेप किये जाते हैं —

(i). यह अनेक देवी-देवताओं की कल्पना करके ईश्वर को सीमित बना देता है। क्योंकि यहाँ सर्वश्रेष्ठ कहलाने के होड़ में एक-दूसरे को सीमित एवं अपूर्ण बना देते हैं।

(ii). अनेकेश्वरवाद का व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर असीम नहीं कहा जा सकता। क्योंकि ईश्वर में व्यक्तित्व की स्थापना कर यह ईश्वर को सीमित एवं अपूर्ण बना देता है।

(iii). मानव के रूप में ईश्वर की कल्पना करने से ईश्वर सभी मानवीय दोषों का शिकार हो जाता है। अतः ईश्वर का मानवीकरण उसे को अपूर्ण बना देता है। ऐसा ईश्वर धार्मिक व्यक्तियों को संतुष्ट नहीं कर सकता है।

(iv). अनेकेश्वरवाद विश्व की व्याख्या में असमर्थ है, क्योंकि यह विश्व या प्रकृति को विभिन्न कृत्रिम विभागों में बाँट कर प्रत्येक विभाग के लिए अलग-अलग ईश्वर की कल्पना करता है। अतः अनेक-ईश्वर के रहने से यह व्यवस्था कायम नहीं रह सकती। इसके लिए एक सर्वशक्तिशाली ईश्वर में विश्वास आवश्यक है।

(v). यह अंधविश्वास पर आधारित है। जहाँ पर मनुष्य अपनी विवशता और डर महसूस करता है, वहाँ ईश्वर के अनेक रूपों की कल्पना कर लेता है। जो कि बुद्धिग्राह्य प्राणियों को स्वीकार नहीं हो सकता।

(vi). अपनी व्यावहारिक आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईश्वर को साधन मानना धर्म के विरुद्ध है।

(vii). अनेकेश्वरवाद के ईश्वर मानव के सर्वोच्च लक्ष्य की पूर्ति में सहायक सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि यह ईश्वर स्वयं सीमित एवं अपूर्ण है।

इस प्रकार से उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अनेकेश्वरवाद मानव के मस्तिष्क एवं हृदय को संतुष्ट नहीं कर पाता है।